1st Choice

Page No.
Date : / /

खारवेल का हाथिगुम्फा अभिलेख

मौर्योत्तरयुगीन अभिलेखों में खारवेल के हाथिगुम्फा अभिलेख का विशेष महत्व है इसमें कलिंग (उड़ीसा) के राजा खारवेल के शासन काल के प्रथम 13 वर्ष की घटनाओं का वर्णन है। यह उड़ीसा के पुरी जिले में भुवनेश्वर मंदिर से तीन मील पश्चिम की ओर स्थित उदयगिरी-खण्डगिरि नाम की पहाड़ियों में बनी प्राचीन जैन गुफाओं में से एक हाथिगुम्फा कहलाती है। इसमें 17 पंक्तियाँ हैं जो करीब 19 वर्गफुट क्षेत्रफल में लिखी हैं।

हाथिगुम्फा-लेख की लिपि ब्राह्मी है। इसमें कोई निश्चित तिथि नहीं दी गई है इसलिए इसका समय ज्ञात: इसकी लिपि की अन्य मौर्योत्तर लेखों की लिपि से तुलना करके एवं इस लेख के अन्तःसाक्ष्य के आधार पर ही निर्धारित किया जा सकता है। बहुत से विद्वान इसे 2 सदी ई.पू. के पूर्वार्द्ध में लिखवाया गया मानते हैं जबकि अन्य अधिकांश विद्वान इसको प्रथम सदी ई.पू. के अंतिम दशकों की रचना बताते हैं। इसका लेखक अज्ञात है परंतु जायसवाल के मतानुसार वह कोई ऐसा उच्च

Scanned by CamScanner

और वयोवृद्ध पदाधिकारी रहा होगा जिसने खारवेल को एक शिशु के रूप में क्रीडा करते देखा होगा और जिसे सम्राट के उस रूप का वर्णन करने का अधिकारी माना गया होगा। यह भी अनुमान अनायास किया जा सकता है कि उत्कीर्ण किए जाने के पूर्व इसे स्वयं खारवेल ने पारित किया होगा।

हाथिगुम्फा-लेख जैन अर्हतों की स्तुति से प्रारंभ होता है परंतु इसका उद्देश्य लौकिक है इसमें खारवेल के शासन काल की महत्वपूर्ण घटनाओं को गिनाया गया है इस दृष्टि से यह समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति से तुलनीय है।

हाथिगुम्फा-लेख की चर्चा सर्वप्रथम पादरी स्टर्लिङ्ग ने 1825 में की। इसके बाद प्रिंसेप ने इसे पढा परंतु गलत-सलत। 1880 में राजेन्द्र लाल मित्र ने इसका दूसरा पाठ और अर्थ छापा जिसमें स्वयं 'खारवेल' नाम भी ठीक तरह नहीं पढा गया था। 1877 में इसका पाठ जनरल कनिंघम ने और 1885 में भगवानलाल इन्द्रजी ने प्रकाशित किया जिससे इसके महत्व का संकेत मिला। इन्होंने ने

1st Choice

Page No.
Date / /

पहली बार इसमें राजा का नाम खारवेल ठीक-ठीक पढ़ा। इसके बाद जायसवाल ने प्रथम बार इसका छाप-चित्र 1917 में "जर्नल आॅव बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी" में प्रकाशित किया।

हाथिगुम्फा-लेख प्राचीनतम राजप्रशस्ति है- केवल नयनिका की नासिक-प्रशस्ति इससे प्राचीनतर हो सकती है। बरुआ ने इसे 'खारवेलचरित' नाम दिया है और जायसवाल ने 'खारवेल प्रशस्ति'।

हाथिगुम्फा अभिलेख में न तो खारवेल की वंशावली दी गई है और न घटनाओं को विषमानुसार वर्णित किया गया है। इसमें खारवेल के शासनु-के प्रत्येक वर्ष की घटनाओं का अलग-2 वर्णन किया गया है।

Scanned by CamScanner

खारवेल के युद्ध

(I) राजनीतिक महत्व :- खारवेल के हाथिगुम्फा अभिलेख से तात्कालिक समय की राजनीतिक स्थिति व खारवेल के द्वारा किए अपने शासन वर्षों में किए जाने वाले आक्रमणों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। अभिलेख से ज्ञात होता है कि उसने अपने शासन के दूसरे वर्ष से कलिंग की तीनों दिशाओं में स्थित अपने राज्यों पर आक्रमण करने प्रारंभ किए। सामान्यतः वह एक वर्ष प्रजा को प्रसन्न करने वाले उत्सव आदि मनाता था या कुछ निर्माण कार्य करता था और अगले वर्ष किसी पड़ोसी राज्य या राज्यों पर आक्रमण करता था उसने अपने शासन के दूसरे और चतुर्थ वर्ष प० दिशा में चाकि बोले, आठवे और दसवें वर्ष उत्तर भारत पर आक्रमण

किया, ग्यारहवें वर्ष सुदूर दक्षिण के राज्यों को आक्रान्त किया और बारहवें वर्ष पुनः उत्तर भारत पर धावा बोला।

(A) खारवेल के शासन काल का दूसरा वर्ष : शातकर्णि की अवहेलना और ऋषिक नगर पर धावा :-

हाथिगुम्फा लेख के अनुसार खारवेल ने अपने शासन के दूसरे वर्ष शातकर्णि की परवाह न करते हुए अर्थात् शातकर्णि को कुछ न मानते हुए (अचितयिता सातकंनि) पश्चिम दिशा में हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदलों की विशाल सेना भेज दी यह सेना कन्हबेंणा नदी तक गई और इसने असिकनगर को विग्रस्त कर दिया।

चौथा वर्ष : विद्याधरों, राष्ट्रिकों और भोजकों का पराभव :-

शातकर्णि की अवहेलना करने के बाद तीसरे वर्ष राजधानी के नागरिकों का मनोरंजन करके खारवेल ने चौथे वर्ष पुनः प. दिशा पर आक्रमण किया। इस वर्ष उसके आक्रमण का लक्ष्य रठिक और भोजक बने जिनके उसने छत्र और सुवर्णपात्र तोड़ डाले, समस्त रत्न सम्पत्ति अपहृत कर ली तथा जिन्हें

Scanned by CamScanner

उसने अपने चरणों में झुकने के लिए विवश किया। इसी प्रसंग में हाथिगुम्फा लेख में प्राचीन कलिंग-नृपतियों द्वारा विनिर्मित विद्याधरों के अधिवास और उनके 'वितथ मुकुट' हो जाने की बात है इन सब घटनाओं का पारस्परिक संबंध खण्ड स्थल पर लेख के खण्डित हो जाने के कारण संदिग्ध हो गया।

रठिकों और भोजकों पर आक्रमण भी खारवेल ने उनके प्रदेश को अपने साम्राज्य में मिलाने के लिए नहीं वरन् उनके रत्न और सम्पति छीनने के लिए (निखित छत भिंगारि हित रतन सपतेये = निक्षिप्त च्छत्रभृङ्गारं हृत रत्न सम्पत्तिकं) किया था। इसलिए इस युद्ध के फलस्वरूप भी उसके राज्य का विस्तार नहीं हुआ होगा।

आठवाँ वर्ष: गोरथगिरि पर विजय, राजगृह का उपपीड़न और यवनराज का पलायन:-

पश्चिमी भारत पर धावा बोलने के अनन्तर खारवेल पाँचवें वर्ष नन्द राज द्वारा निर्मित नहर को राजधानी लाया तथा छठे वर्ष उसने पुर और जनपद को करों से मुक्त कर परितुष्ट किया। सातवें वर्ष का वर्णन

Scanned by CamScanner

1st Choice

Page No.
Date 12/ /

अपठनीय हो जाने के कारण अज्ञात है। आठवें वर्ष से उसने पुनः पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण किए। इस बार उसने अपना लक्ष्य मगध को बनाया। हाथीगुम्फा लेख के अनुसार उस वर्ष उसने अपनी विशाल सेना के साथ आक्रमण कर गोरथ-गिरि को जीत लिया तथा राजगृह को आतंकित किया। इस कुकर्म के सम्पादन के परिणामस्वरूप उत्पन्न नाद से भयभीत होकर यवनराज (दिमित?) अपनी सेना और वाहनों को लेकर मथुरा की ओर भाग गया। गोरथगिरि बिहार राज्य के गया जिले में स्थित बराबर नाम की पहाड़ियों का पुराना नाम था। यह मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह की प० दिशा में स्थित महत्वपूर्ण सैनिक चौकी थी। इस अभियान में खारवेल ने कलिंग से मगध जाते समय दीर्घ नागपुर वाला मार्ग पकड़ा होगा। इस युद्ध में उसका प्रतिद्वन्द्वी राजा कौन था यह नहीं बताया गया।

खारवेल द्वारा मगध में सफलता प्राप्त इस सफलता के समाचार से यवनराज बहुत भयभीत हुआ। यह यवनराज

Scanned by CamScanner

सम्भवतः पूर्वी पंजाब अथवा मथुरा प्रदेश का कोई स्थानीय यूनानी राजा था न कि यूथीडेमस का पुत्र डिमिट्रियस। इस अभियान द्वारा खारवेल ने मगध के किसी भाग को अपने राज्य में मिला लिया था इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता।

दसवां वर्ष : 'भारतवर्ष' पर आक्रमण –

मगध पर आक्रमण करने के बाद खारवेल ने नवे वर्ष महाविजय नाम का राजप्रासाद बनवाया। इसके उपरान्त दसवे वर्ष उसने 'दण्ड संधि' और 'सामनीति' का अनुसरण करते हुए भरधवस (=भारतवर्ष) पर आक्रमण किया यहाँ भारतवर्ष से आशय उत्तर भारत (सम्भवतः गंगा की उपत्यका वाले प्रदेश) से है।

यह कहना असम्भव है कि खारवेल के इस अभियान का शिकार वस्तुतः कौन राजा हुआ था और इसका क्या परिणाम निकला। फिर भी इतना कहा जा सकता है कि इस बार भी वह उत्तर भारत में लूटपाट करके ही लौट आया था।

Scanned by CamScanner

ग्यारहवाँ वर्ष : पीथुण्ड नगर का विनाश और तमिल राज्यों के संघ का विघटन :-

अपने शासन काल के ग्यारहवें वर्ष खारवेल ने दक्षिणी राज्यों की ओर ध्यान दिया। हाथिगुम्फा लेख के अनुसार उसने उस वर्ष पीथुण्ड नगर का विनाश करके उसे गधों द्वारा खींचे गए हल से जुतवा दिया, पलायित शत्रुओं के मणिरत्न प्राप्त किए और तमिल देशों के तेरह सौ वर्ष पुराने संघ (?) को जो उसके अपने राज्य के लिए संकट का स्रोत था छिन्न-भिन्न कर दिया। पीथुण्ड की पहिचान स्पष्ट यूनानी लेखक टॉलेमी (दूसरी सदी का मध्य) द्वारा ज्योग्रफी पुस्तक में उल्लिखित मैसोलोई जाति के जो अनुमानतः आधुनिक मसुलिपटम् प्रदेश में रहती थी पितुण्ड्र नामक नगर से की जा सकती है। जैन ग्रन्थ उत्तराध्यान में पिहुण्ड को एक बंदरगाह बताया गया है लेवी ने इसे भी हाथिगुम्फा अभिलेख के पीथुण्ड से अभिन्न बताया है।

बारहवाँ वर्ष : उत्तरापथ पर आक्रमण, अंग मगध विजय तथा पाण्ड्यों से सम्पत्ति लाभ—

अपने शासन के बारहवें वर्ष खारवेल ने उत्तर भारत के पूर्वी प्रदेशों पर पुनः आक्रमण किया हाथिगुम्फा लेख के अनुसार इस वर्ष उसने उत्तरापथ के राजाओं को विगर्हत किया, मगध वासियों में विपुल भय उत्पन्न किया और अपने हाथियों को गंगा का जल पिलाया, मगधेश्वर बहसतिमित को अपने चरणों में झुकने के लिए विवश किया उस जिन मूर्ति (कलिंग जिन) को जिसे नन्द राजा उठा के ले गए थे तथा अंग-मगध की सम्पत्ति को कलिंग ले आया तथा पाण्ड्य नरेश द्वारा प्रेषित घोड़े हाथी रत्न माणिक्य एवं सैकड़ों हजार मणिमुक्ता प्राप्त किए।

सांस्कृतिक महत्व

(A) खारवेल का धर्म और धार्मिक नीति/महत्व :—

खारवेल प्रश्नातीत रूप से एक जैन नरेश था। उसके हाथिगुम्फा-लेख का अर्हतों और सिद्धों को नमस्कार से प्रारम्भ होना। अपने शासन के बारहवें वर्ष उसका 'कलिंगजिन'

Scanned by CamScanner

1st Choice

Page No.
Date / /

की मूर्ति को मगध से वापिस लाना तथा अपने शासन के [illegible] तेरहवें वर्ष कुमारी पर्वत पर जैन अर्हतों के वर्षावास के लिए आश्रय गुहाएँ बनवाना उसकी जैनधर्म में आस्था के सबल संकेत है। उसकी अग्रमहिषी ने भी अर्हतों के अनुग्रह के हेतु कलिंग के जैन साधुओं के लिए गुहा बनवाई थी।

मूल्यांकन

अरहंत पसादाय कलिंगानं समनानं लेनं कारित = अर्हत प्रसादाय कलिंगेभ्यः श्रमणेभ्यः लयनं कारितं) खारवेल के द्वारा धमराजा और भिक्षुराजा उपाधियाँ धारण किया जाना भी सम्भवतः उसकी जैनधर्म में रुचि का प्रमाण है लेकिन यह भी सर्वथा स्पष्ट है कि वह धर्मान्ध जैन नहीं था उसे धर्म के प्रभाव से विहीन और किसी भी हिन्दू राजकुमार के लिए अनुरूप शिक्षा मिली थी। उसने अपने को सब सम्प्रदायों का आदर करने वाला तथा सब मंदिरों का जीर्णोद्धार कराने-वाला (सवदेवायतन - सकार - कारको = सर्वदेवायतन संस्कारकारक कहने में गर्व का अनुभव किया है। अपने शासन के आठवें वर्ष उसने बाह्मणों को कर के

भार से मुक्त कर दिया था। जैन-धर्म के अहिंसावाद के परिणाम-स्वरूप वह शत्रुओं के विरुद्ध हिंसा के प्रयोग से विचलित हुआ हो ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। इन तथ्यों के प्रकाश में उसकी जैन धर्म में रुचि को वैसा राजनीतिक महत्व नहीं दिया जा सकता जैसा अशोक की बौद्ध धर्म में रुचि को दिया जाता है।

राजनीतिक महत्व

B. (c) महामेघवाहन - यह सातवाहन की तरह वंश नाम है। पुराणों में आन्ध्रों (सातवाहनों) के समकालीन कोसल (दक्षिण कोसल) के मेघ (महामेघवाहन) वंशीय नरेशों का उल्लेख है जिन्हें 'महाबली' और 'बुद्धिमान' कहा गया है। जायसवाल, बरुआ और विद्यालंकार जैसे कुछ विद्वान उन्हें खारवेल के वंश का सदस्य ही मानते हैं। राजतरंगिणी में एक राजा का नाम मेघवाहन बताया गया है।

महामेघवाहन का अर्थ महान मेघ या विशाल हाथी है वाहन जिसका होता है। स्मरणीय है कि 'अर्थशास्त्र' में कलिंग के हाथियों को श्रेष्ठ बताया गया है। यह भी सत्य है कि महामेघवाहन खारवेल के किसी पूर्वज का नाम रहा हो।

Scanned by CamScanner